ISSN 2456-4753

प्लूटो

अंक 3 वर्ष 3 अगस्त - सितम्बर, 2018

मूल्य ₹60

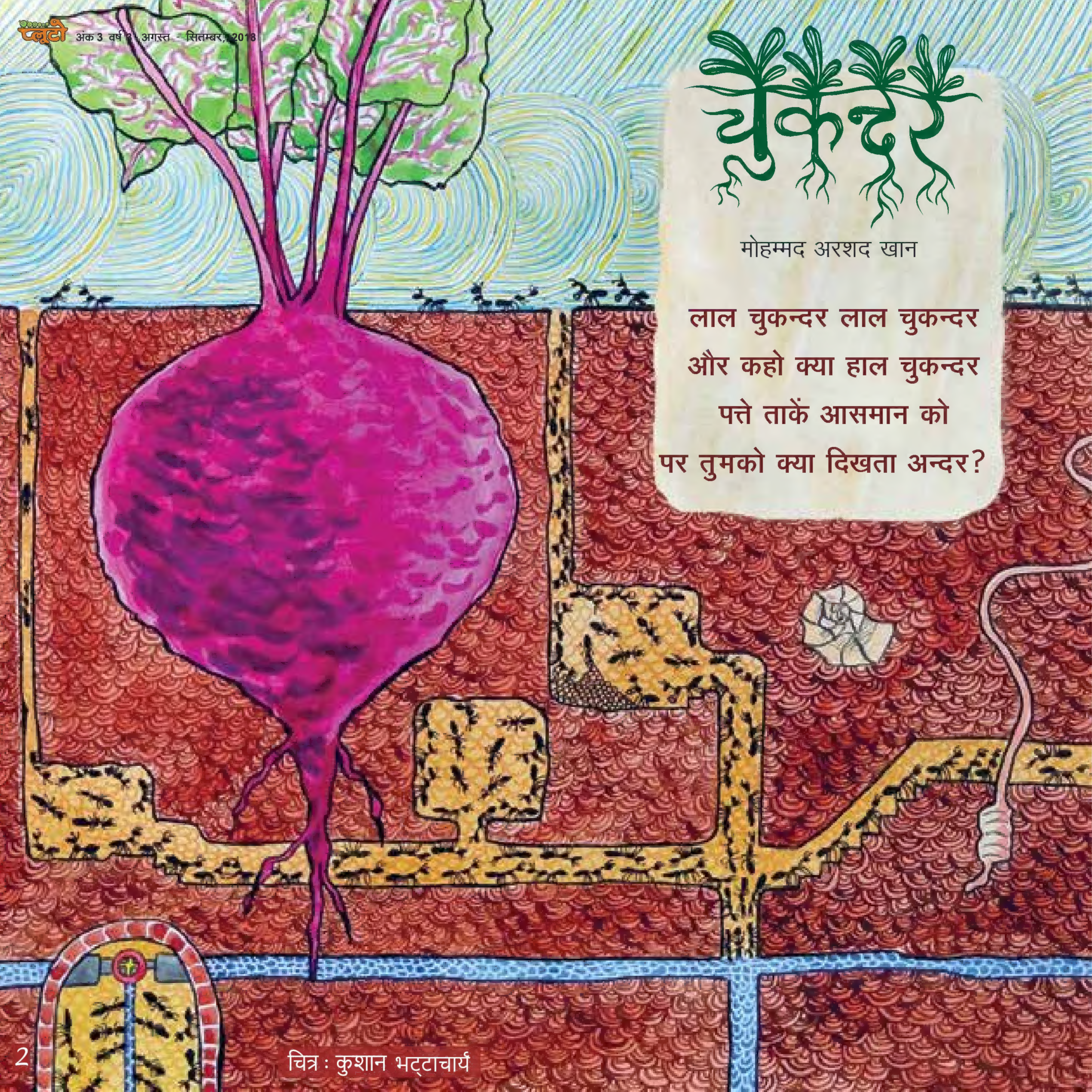

चुकंदर

मोहम्मद अरशद खान

लाल चुकन्दर लाल चुकन्दर
और कहो क्या हाल चुकन्दर
पत्ते ताकें आसमान को
पर तुमको क्या दिखता अन्दर?

चित्र : कुशान भट्टाचार्य

दो चिड़ियाँ

वीरेन्द्र दुबे

अलग बनक की
अलग सनक की
चिड़ियों की मनमर्ज़ी है
एक बढ़ई एक दर्ज़ी है।
एक को जब जब गाना है
एक को टाँग अड़ाना है
एक को दिनभर सोना है
एक का काम बस रोना है।

चित्र - नबरीना सिंह

ओले गिरे

हमारे स्कूल में नए टीचर
आए हैं। मुझे उनकी कुछ
बातें समझ में नहीं आतीं।
पर अच्छी बहुत लगती हैं।
जैसे एक दिन वो कह रहे थे,
"ओले जब गिरें उन्हें
तभी चुन लेना चाहिए।"

बहुत दिनों से मैं एक बबूल के सूखे पेड़ पर एक उल्लू को देख रहा था। मैं उसे आते-जाते कई बार देख चुका था। एक दिन मैंने उस पेड़ के सामने अपना कैमरा फिक्स कर दिया। और एक के बाद एक कर बहुत सारे फोटो ले लिए। थोड़ी देर बाद वो अपनी खोखल से निकला और उड़ गया।

इस फोटो को देखने के बाद ही मुझे पता चला कि अपने घर में बैठा वो मेरी हर हरकत पर आँख रखे हुए था।

फोटोः महेश कुमार, कोपरा, छत्तीसगढ़

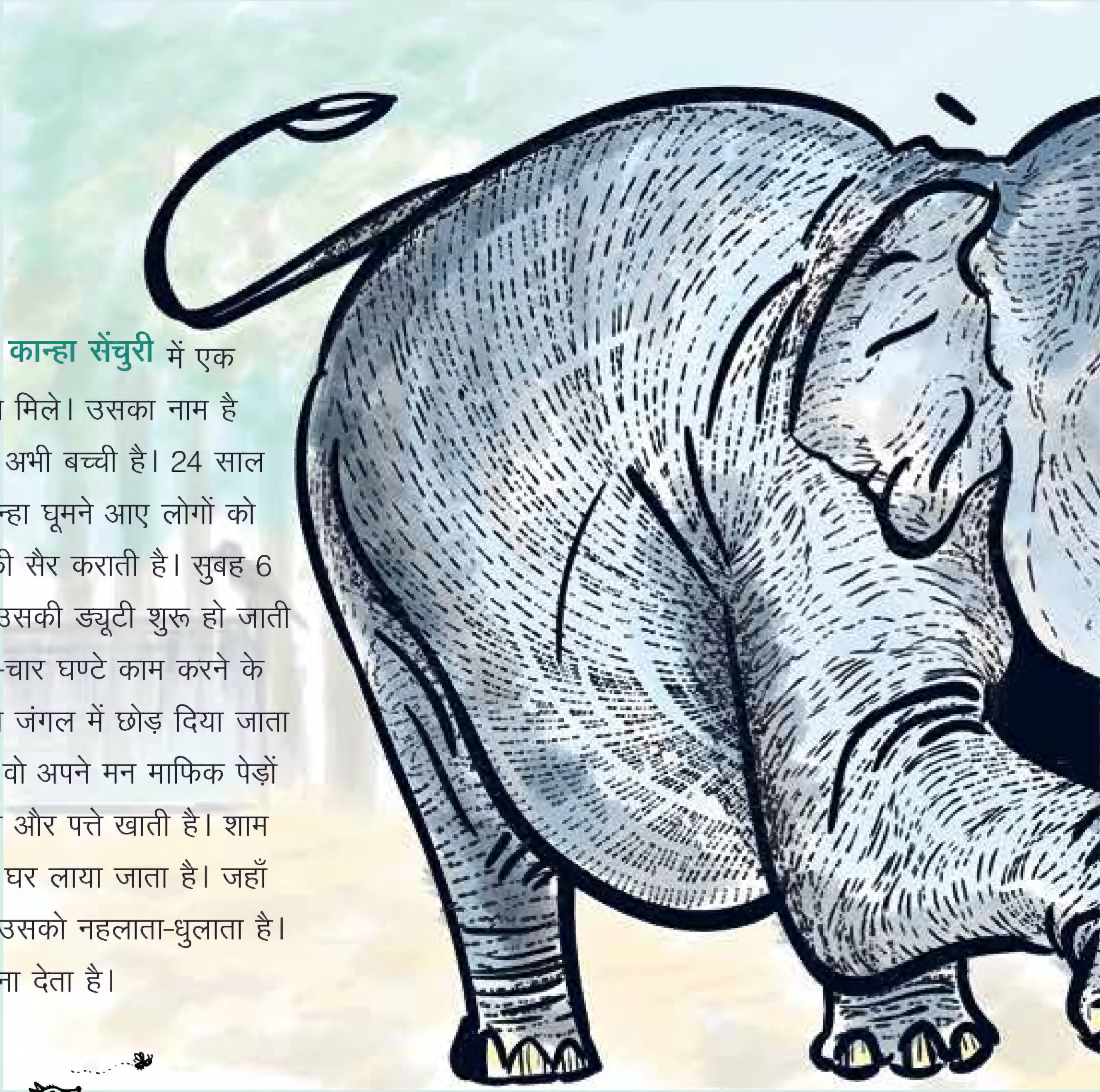

हम कान्हा सेंचुरी में एक हथनी से मिले। उसका नाम है निर्मला। अभी बच्ची है। 24 साल की। कान्हा घूमने आए लोगों को जंगल की सैर कराती है। सुबह 6 बजे से उसकी ड्यूटी शुरू हो जाती है। तीन-चार घण्टे काम करने के बाद उसे जंगल में छोड़ दिया जाता है। वहाँ वो अपने मन माफिक पेड़ों की छाल और पत्ते खाती है। शाम को उसे घर लाया जाता है। जहाँ महावत उसको नहलाता-धुलाता है। और खाना देता है।

हाथी क्या खाता है...

उसके खाने में होता है -

लगभग 9 किलो गेहूँ के आटे, आधा किलो सोयाबीन और आधा किलो चने के आटे की बनी रोटियाँ। इसमें 240 ग्राम नमक होता है। वो पहले रोटियाँ खाती है फिर 1 किलो गुड़ खा जाती है।

खाने के बाद उसे फिर से छोड़ दिया जाता है। रात में वो जंगल में दूर निकल जाती है। जंगल में वो खाती-पीती है। बीच-बीच में झपकियाँ भी लेती रहती है।

सुबह पाँच बजे महावत का साथी उसे जंगल से लाने निकल पड़ता है। लौटकर उसे नाश्ता दिया जाता है - दो-तीन रोटियाँ बस।

और 7 बजे से नौकरी फिर शुरू...

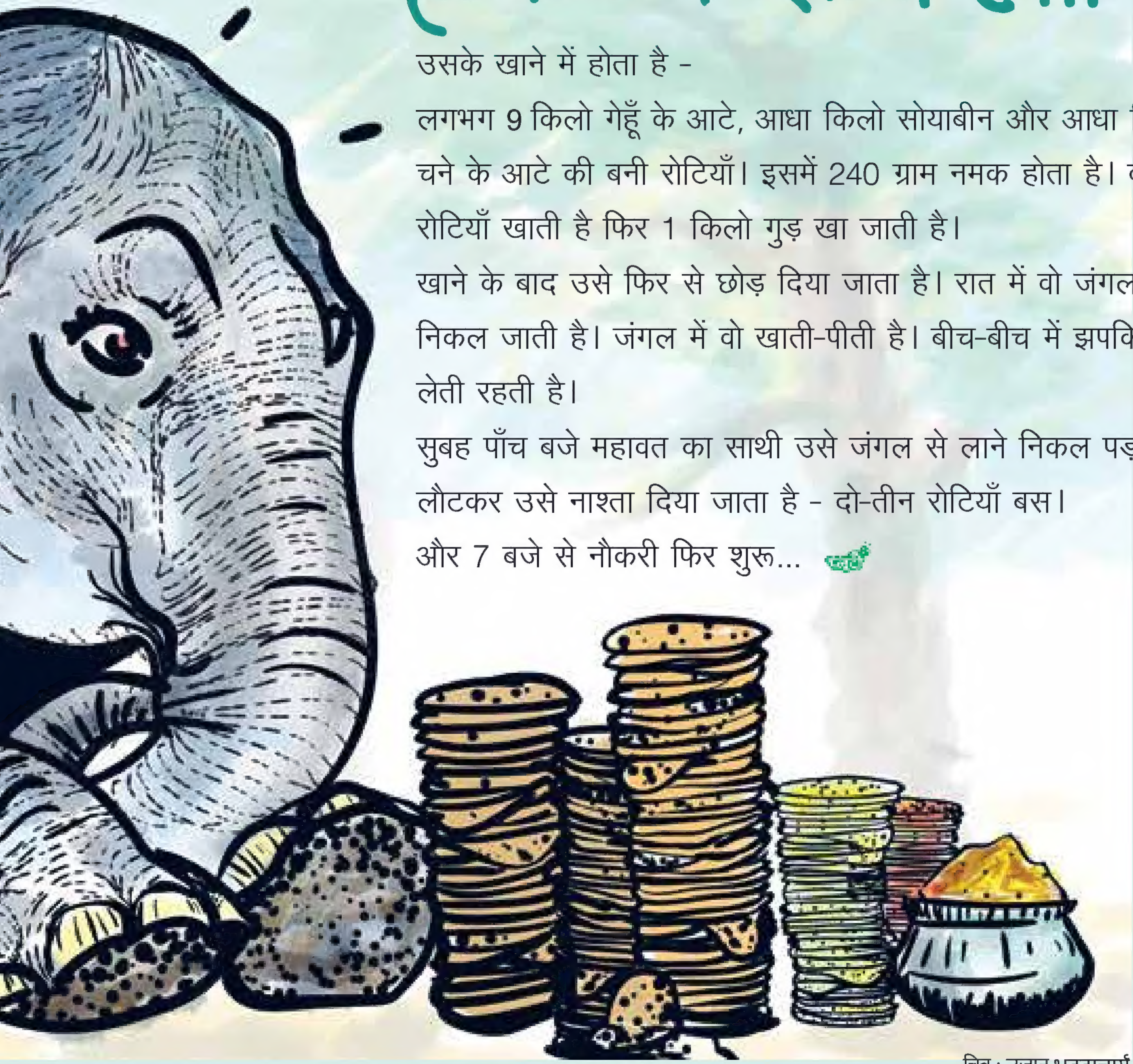

चित्र : उजान भट्टाचार्य

यह खूबसूरत मूर्ति दक्षिण भारत के वरदराज पेरूमल मन्दिर में है। इसका शरीर तो शेर जैसा है पर चेहरा एक महिला का है।

क्या तुम भी एक ऐसा चित्र बनाना चाहोगे जिसका सिर तुम्हारे पसन्दीदा जानवर का है और शरीर इंसान का या फिर इसका उलटा भी बना सकते हो।

अशोक भौमिक

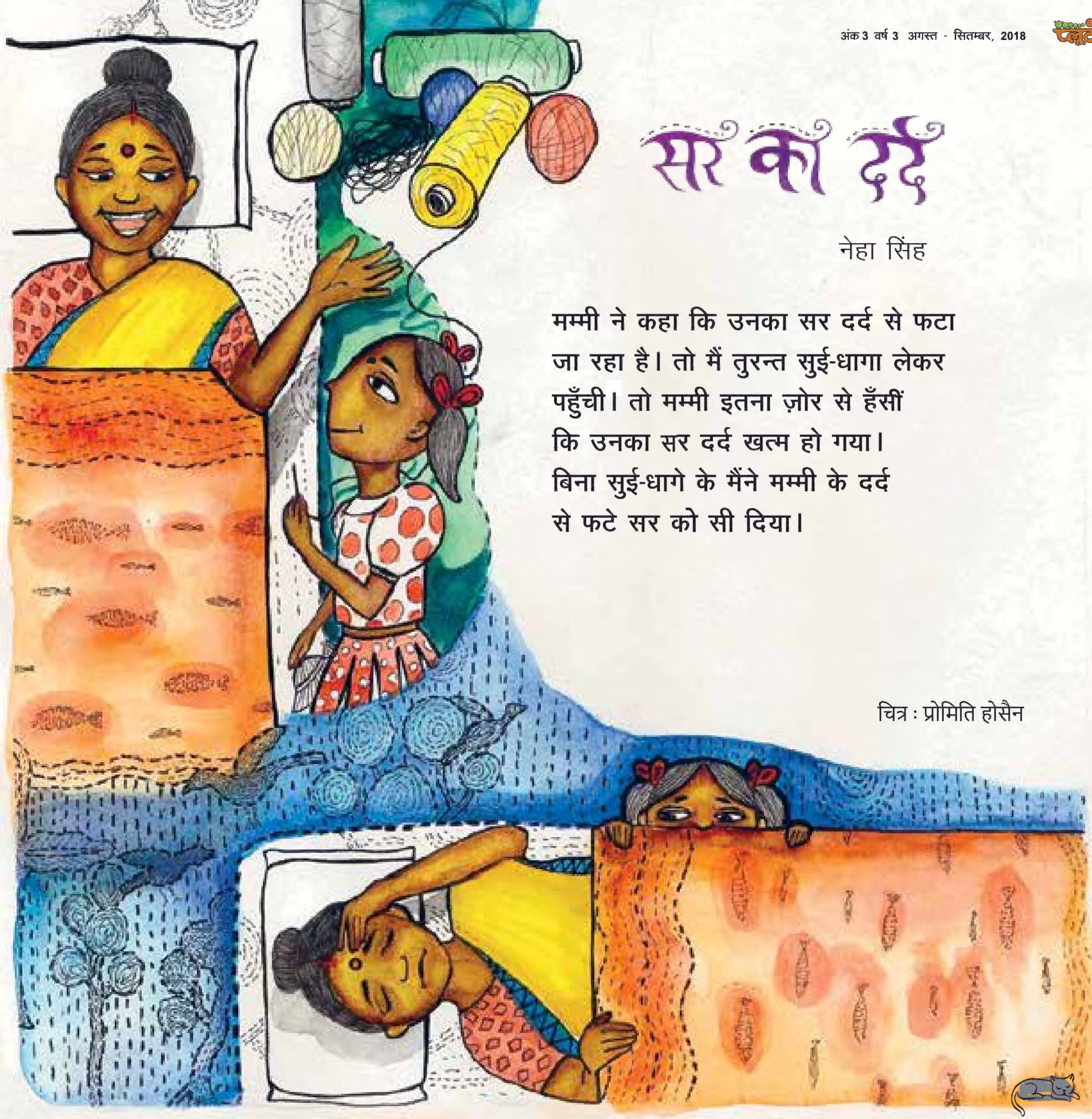

सर का दर्द

नेहा सिंह

मम्मी ने कहा कि उनका सर दर्द से फटा जा रहा है। तो मैं तुरन्त सुई-धागा लेकर पहुँची। तो मम्मी इतना ज़ोर से हँसीं कि उनका सर दर्द खत्म हो गया। बिना सुई-धागे के मैंने मम्मी के दर्द से फटे सर को सी दिया।

चित्र : प्रोमिति होसैन

झण्डा

मनोज कुमार झा

ऊँचा ऊँचा उड़ा बहुत दिन
झण्डा बोला डण्डे से ।
घास पर लेटूँगा कुछ दिन
आऊँगा अगले सण्डे से ।

चित्र :अर्चि मोदी

चींटी छींकी

श्याम सुशील

नन्ही चींटी
बड़ा पहाड़
रस्ता रोके
खड़ा पहाड़
चींटी छींकी
उड़ा पहाड़
चीन में जाके
गिरा पहाड़

चित्र : चन्द्रिमा भट्टाचार्य

STD
PCO

चन्देरी का सबसे पुराना बाज़ार है - सदर बाज़ार। इस बाज़ार में हमारी चूड़ियों की यह दूकान है। चूड़ियों की दूकान से सुन्दर, सजीली, रंग-बिरंगी दूकान दूसरी नहीं होती। मुझे रंग अच्छे लगते हैं। मैं दूकान में बैठा-बैठा चित्र बनाता रहता हूँ। रंगों से खेलता रहता हूँ। हमारी दूकान में चूड़ियों के रंग तो हैं ही चित्रों के रंग भी हैं। इतनी सुन्दर चूड़ियाँ लड़के क्यों नहीं पहनते?

चित्र : शुभम लखेरा

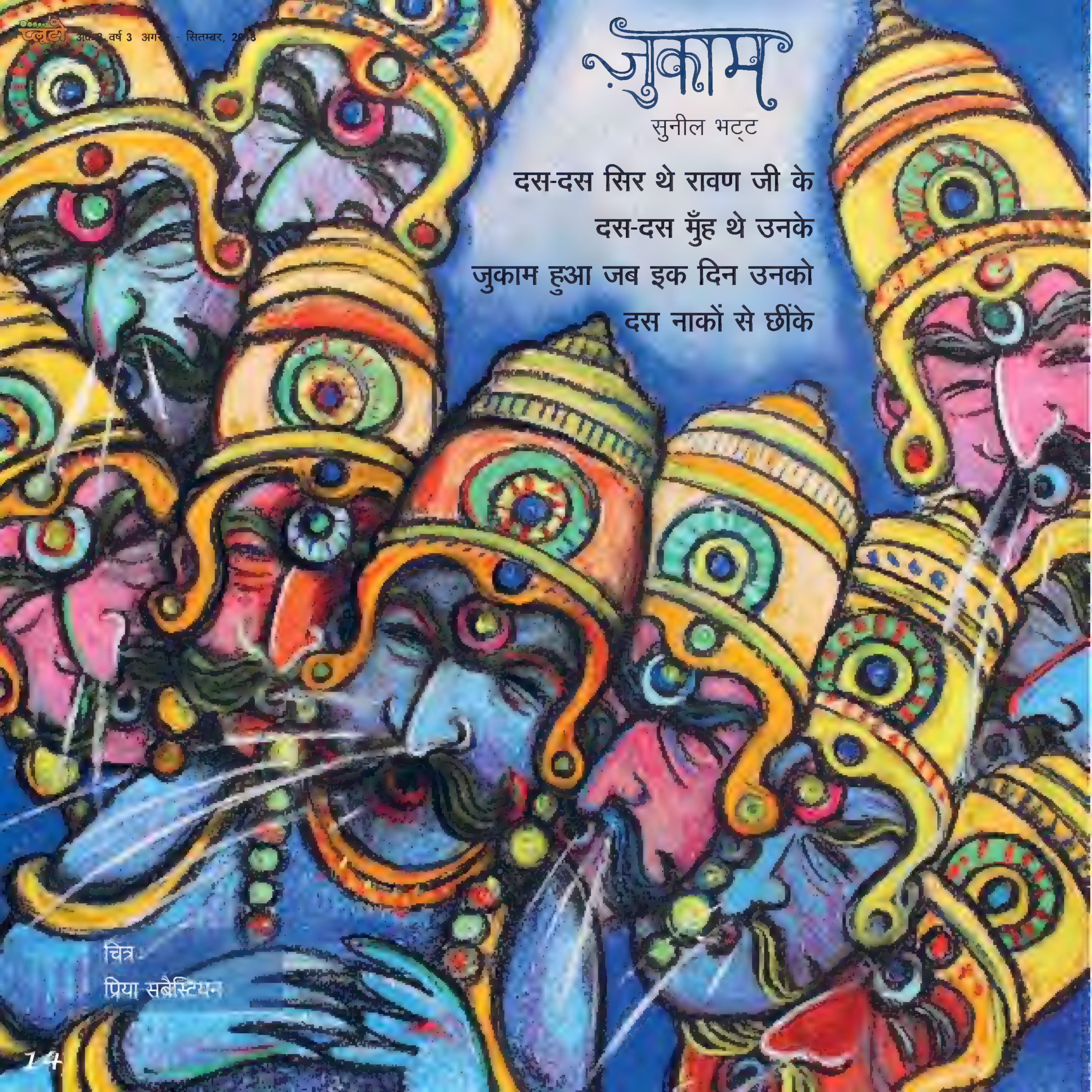

ज़ुकाम

सुनील भट्ट

दस-दस सिर थे रावण जी के
दस-दस मुँह थे उनके
जुकाम हुआ जब इक दिन उनको
दस नाकों से छींके

चित्र
प्रिया सबैस्टियन

पन्ना
२३
हाय, मेरी खीर !
भाई, मैं तो सिर्फ चख
रहा था कि बनी कैसी है !

दस्तक

शशि सबलोक

तुम मेरे घर आना।

पर सुनो, दरवाज़ा ज़ोर-से मत खटखटाना। मेरे दादा ने आम का एक पेड़ उगाया था। यह दरवाज़ा उसी आम से बना है। मेरे दादा को तेज़ आवाज़ अच्छी नहीं लगती थी। और मेरी दादी का तो तेज़ आवाज़ से सिर दुखने लगता था। उस आम को पानी दादी ही देती थी।

तेज़ आवाज़ तो उस आम पर रहनेवाली चिड़ियों को भी अच्छी नहीं लगती थी। और कभी-कभी तो गिलहरी के हाथ से खाना भी छूट जाता था। और तुम्हारे खटखटाने से आम के बौर भी तो गिर सकते हैं। और उसकी कोटर में बैठे उल्लू डर सकते हैं। खाना ले जाती चींटियाँ रुक सकती हैं।

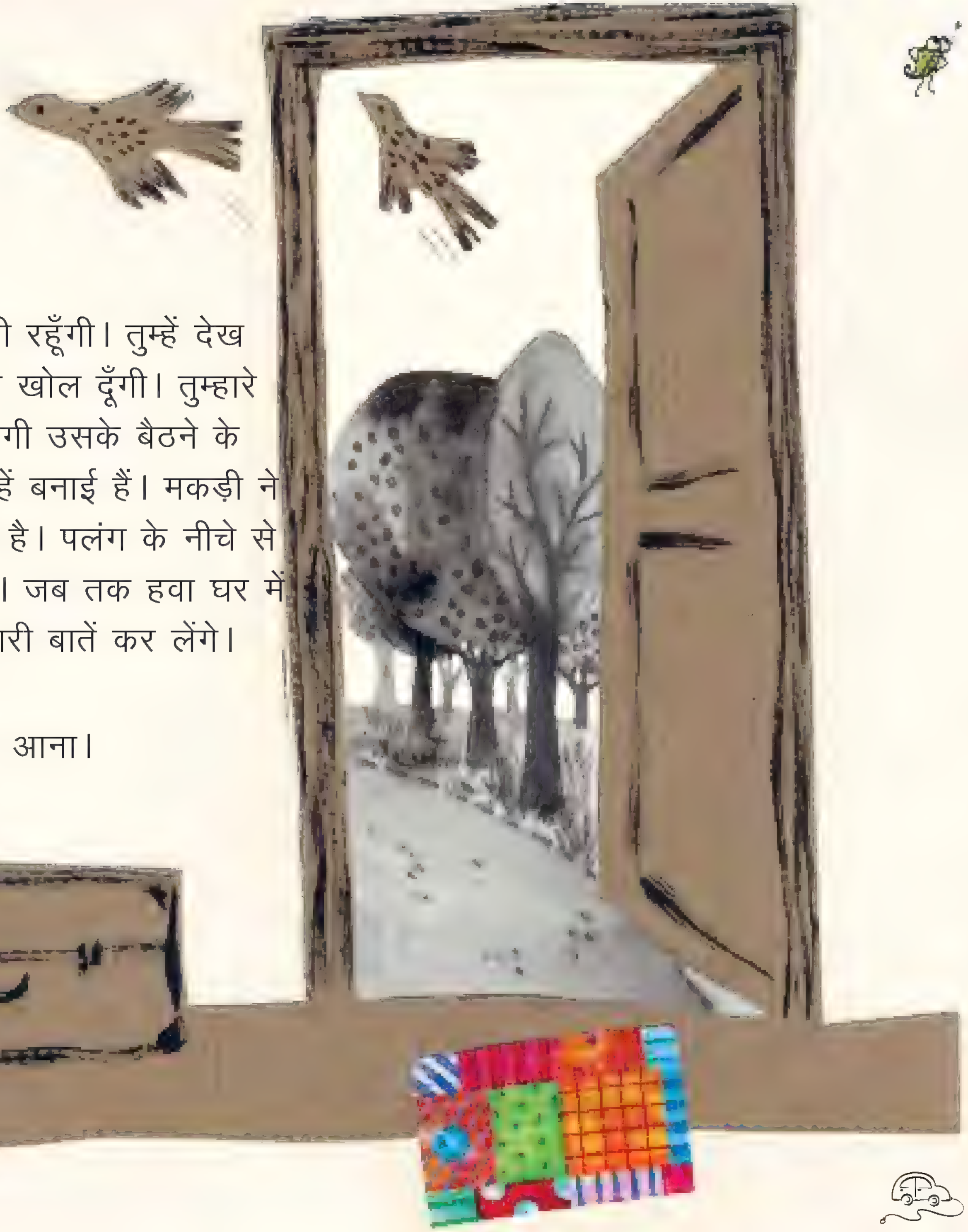

मैं खिड़की पर बैठी रहूँगी। तुम्हें देख लूँगी और दरवाज़ा खोल दूँगी। तुम्हारे साथ जो हवा आएगी उसके बैठने के लिए कई नई जगहें बनाई हैं। मकड़ी ने नया जाला बनाया है। पलंग के नीचे से ट्रंक हटा लिया है। जब तक हवा घर में घूमेगी, हम ढेर सारी बातें कर लेंगे।

तुम मेरे घर ज़रूर आना।

बाँखू और बजरंगी

नेहा बहुगुणा
चित्र : प्रिया कुरियन

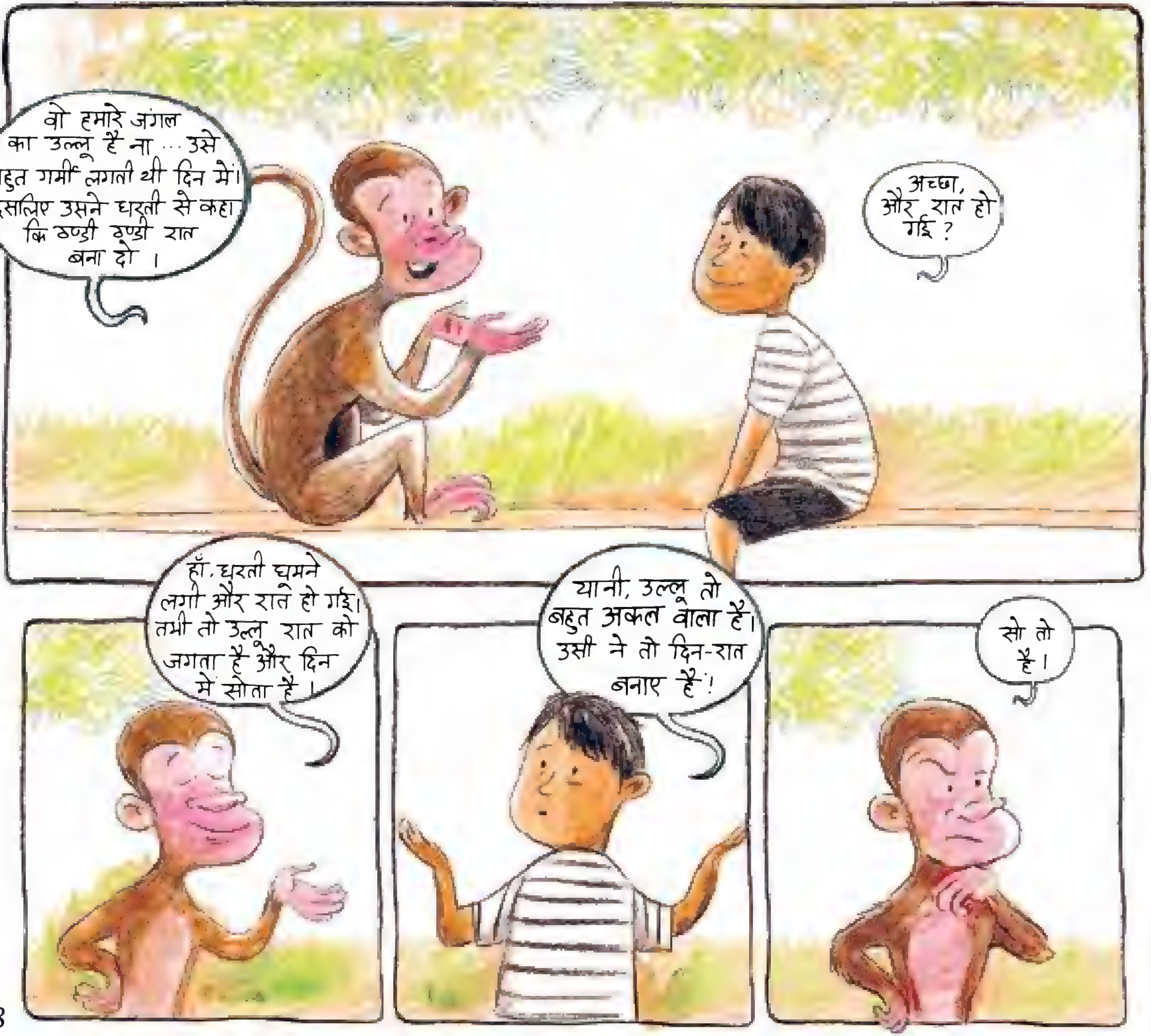

तो फिर बुद्धू लोगों को उल्लू क्यों कहते हैं?
वैसे कोई भी बुद्धू नहीं होता है। सब अपनी-अपनी तरह से बातें समझते हैं।
ओह, अब समझा, तो जिन्हें दूसरे की बातें समझ नहीं आतीं वो उसे उल्लू कह देते हैं।
बिलकुल! अब उल्लू को ही देख लो, सब रात को सोते हैं और वो जगता है।
भला ऐसा कोई करता है क्या?
उल्लू वो करता है जो उसे अच्छा लगता है।

बारिश में हमारी कॉलोनी के तीन लँगूर मुझे बड़े दुखी दिखते हैं । बबूल की डाल पर कँधे झुकाए, पूँछ लटकाए वो उदास बैठे रहते हैं। शायद लगातार भीगे रहने से परेशान हो जाते होंगे।

सोचो, बाकी जीवों की क्या हालत होती होगी। छोटे छोटे कीड़े मकोड़ों की सोचो। उनके लिए तो एक बूँद की चोट ही काफी होती होगी। वे एक बूँद के नीचे दबकर चपटे हो जाते होंगे।

तितलियाँ तो बारिश में दिखती ही नहीं हैं। वे पानी-हवा से बचने के लिए किसी पौधे में छिप जाती हैं। लेकिन मच्छरों की बात ही कुछ अलग है। बारिश से मच्छरों को नुकसान नहीं होता है। वो बूँदों से टकराकर भी बच जाते हैं।

होता यह है कि बूँद से टकराते ही वे बूँद के साथ नीचे गिरने लगते हैं। ऐसे जैसे चलती बस से टकराने की बजाय, कोई उस पर चढ़ जाए। फिर इस बूँद के ज़मीन पर गिरने से पहले वे इस बूँद-बस से उतर जाते हैं।

तुम बारिश में क्या करते हो?

बारिश

विनता विश्वनाथन
चित्र :प्रोमिति होसैन

झील किनारे के जंगल में
बोल रहा था बाघ

प्रभात

चित्र : स्मरक रॉय

बहुत घने पेड़ों के पीछे
डोल रहा था बाघ

हैप्पी टीचर्स डे

बकरी और राशिद

चन्दन

बकरी चराते-चराते राशिद ने देखा। आम के बगीचे में माली बाबा नहीं हैं। वो चुपके से बगीचे में घुसा और आम के सबसे ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। राशिद आम तोड़ ही रहा था कि जाने किधर से माली बाबा आ टपके। आम के ठीक नीचे। राशिद कायदे से उतरता तो पकड़े जाने का खतरा था। उसने तय किया कि वो सीधे ज़मीन पर कूदेगा और दौड़ लगा लेगा।

माली बाबा ने राशिद को देख लिया था। राशिद जिधर से भी कूदने की कोशिश करता, माली बाबा फुर्ती से उसी तरफ हो जाते। और ऐसे खड़े होते कि राशिद कूदे तो सीधे उनके हाथ में हो। राशिद को अब पिटाई का डर सताने लगा था।

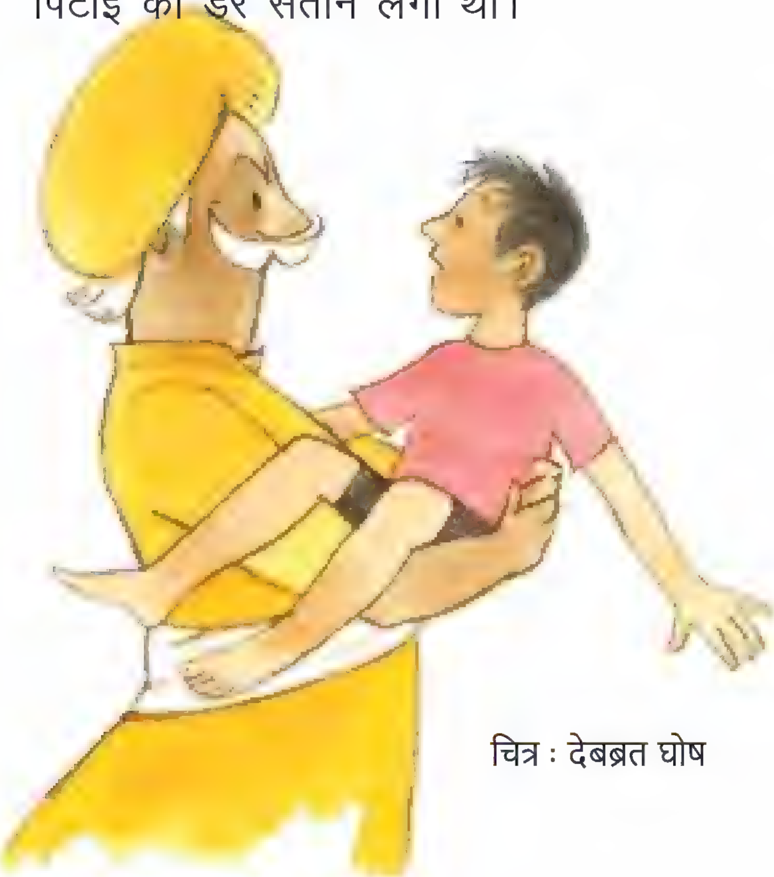

चित्र : देबब्रत घोष

कुछ देर तक यही आँख-मिचौनी चलती रही। माली बाबा ठहरे बुज़ुर्ग आदमी। इस कसरत से वे थक गए और एक जगह खड़े होकर हाँफने लगे। राशिद ने सोचा, "सही मौका है।" और दूसरी तरफ से कूद गया। पर यह क्या? माली बाबा ने भी फुर्ती से जगह बदली और राशिद सीधा उनके हाथों में आ गिरा। वे राशिद को गोद में लिए लिए चिल्लाए, "अरे मूरख। इतनी ऊपर से कूदता तो टाँग नहीं टूट जाती!"
माली बाबा ने राशिद को नीचे उतारा। उसकी पीठ पर प्यार से एक धौल जमाई और बोले, "जा भाग यहाँ से।"

किनके तिनके

नरेश सक्सेना

चिड़िया चुनती तिनके तिनके
जाने तिनके थे किन किन के
बच्चे उड़े घोंसला खाली
प्यारे पेड़ो, चिड़िया बोली
खाली कर दो मेरी झोली
ले जाओ जितने हों जिनके
रखे नहीं थे मैंने गिनके...

दशहरा को हम मैसूरवाले दसरा हब्बा कहते हैं। हर साल इस दिन जम्बू की सवारी निकलती है। हाथी रंग-बिरंगे कपड़ों से सजे-धजे जुलूस में निकलते हैं। हौदे में चामुण्डी देवी की मूर्ति बैठी रहती है। जम्बू सवारी देखने देश से और विदेश से लोग आते हैं। जो पहले पहुँचकर अपनी जगह बचा लेते हैं वे मज़े में रहते हैं।

मेरा भाई जगह ढूँढने पहले ही चला गया है। उसने मुझसे कहा कि चिन्ता मत करो। मैंने ऐसी जगह ढूँढ ली है जहाँ से सब कुछ दिखाई देगा। क्या तुम मेरे भाई को पहचान सकते हो? उसने नीली टोपी पहनी है।

लेख व चित्रः निहारिका शेनॉय

चूज़े चार

- फहीम अहमद

चूज़े चार
गए बज़ार

रसीले बेर
बेचता शेर

खरीदे बीस
गिने तो तीस

दस लौटाए
घर को आए

चित्र :नयनतारा रॉय

प्लूटो
इकतारा द्वारा विकसित

सम्पादनः सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

डिज़ाइनः प्रोइती रॉय

आवरण चित्रः प्रोइती रॉय

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा
तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी
की इकाई के लिए
मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी.,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020
से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, **सम्पादकः सुशील शुक्ल**

सम्पादकीय पताः
ई-7/413 एच आई जी, प्रथम तल
अरेरा कॉलोनी भोपाल - 462016
फोन - 0755 2446002 , 0755 4939472
8989544927
ई मेलः pluto@ektaraindia.in
www.ektaraindia.in

हिमाक्षी भट्ट तीन साल, लखनऊ

चित्र : कुशान भट्टाचार्य

प्लूटो अंक 3 वर्ष 3 अगस्त - सितम्बर, 2018

आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका